

2-इक्कीसवीं सदी बनाम उज्ज्वल भविष्य-भाग २

अध्याय 1: विभीषिकाओं के अन्धकार से झाँकती प्रकाश किरणें

प्रश्न 1: इक्कीसवीं सदी में दुनियाँ में क्या परिवर्तन आए हैं और मनुष्य की आंतरिक स्थिति कैसी है?

उत्तर 1: बीसवीं सदी के पिछले दो दशकों में विज्ञान में असाधारण प्रगति हुई है, जिससे दुनिया की काया पलट गई है। सुख-साधन बढ़े हैं, लेकिन साथ ही तनाव, उद्विग्नता और मानसिक संश्लोभ भी बढ़े हैं। मनुष्य अंदर से अशांत है और भौतिक सुख की मृगतृष्णा में भटककर उचित-अनुचित का ज्ञान खो चुका है। परिणामस्वरूप, संकटों के घटाटोप चुनौती बनकर उसके समक्ष आ खड़े हुए हैं।

प्रश्न 2: भविष्य विज्ञानी एल्विन टॉफलर ने अपनी पुस्तक 'फ्यूचर शॉक' में क्या कहा है?

उत्तर 2: प्रसिद्ध चिन्तक भविष्य विज्ञानी श्री एल्विन टॉफलर ने अपनी पुस्तक 'फ्यूचर शॉक' में लिखा है कि यह अच्छा है कि गलतियाँ मनुष्य ने ही की हैं, आपत्तियों को उसी ने न्योता है, और वही अब इसका समाधान ढूँढने पर उतारू हो रहा है। यह दर्शाता है कि समस्याओं का जनक मनुष्य ही है और समाधान भी उसे ही खोजना होगा।

प्रश्न 3: 'टाइम' पत्रिका ने 1988 में 'मैन ऑफ द ईयर' के बजाय किसे 'प्लेनेट ऑफ द ईयर' घोषित किया और इसका क्या महत्व था?

उत्तर 3: सन् 1988 के लिए 'टाइम' पत्रिका ने किसी व्यक्ति को 'मैन ऑफ द ईयर' न चुनकर, पृथ्वी को "प्लेनेट ऑफ द ईयर" घोषित किया। यह घोषणा 2 जनवरी 1989 को की गई, जिसमें पृथ्वी को 'एन्डेन्जर्ड अर्थ' यानी प्रदूषण के कारण संकटों से घिरी हुई दर्शाया गया था। यह इस बात का आभास देता है कि मनीषियों का चिंतन प्रवाह विश्व के भविष्य के प्रति गतिशील हो रहा है।

प्रश्न 4: मनीषियों और भविष्य द्रष्टाओं के अनुसार वर्तमान संकटपूर्ण स्थिति के बावजूद भविष्य कैसा होगा?

उत्तर 4: हटसन इंस्टीट्यूट के हरमन कॉन, वर्ल्डवाच इंस्टीट्यूट के लेस्कर आर ब्राउन, नोष्ट्राडेमस, कीरो, जीन डीक्सन, और महर्षि अरविन्द जैसे मूर्धन्यगण कहते हैं कि यद्यपि यह समय संकटों से भरा है और विनाश समीप दिखाई देता है, तथापि अंततः दुर्बुद्धि पर सद्बुद्धि की ही विजय होगी और पृथ्वी पर सतयुगी व्यवस्था आएगी। वे आशावान हैं कि मनुष्य बारह वर्षों की संधि बेला में श्रेष्ठता की दिशा में पुरुषार्थ करेगा।

अध्याय 2: मानवी दुर्बुद्धि से ही उपजी हैं आज की समस्याएँ

प्रश्न 5: मनुष्य अपनी किस भूल के कारण समस्याओं में अधिक फँसता है?

उत्तर 5: मनुष्य कर्म करने में स्वतंत्र है, पर फल प्राप्त करने में सृष्टि के नियमों से बँधा है। वह तुरंत परिणाम न मिलने पर अदूरदर्शिता अपनाता है और भूल जाता है कि विवेकशीलता की उपेक्षा करने पर उसे दुष्परिणाम भुगतने पड़ेंगे। यही वह भूल है जिसके कारण मनुष्य अधिक गलतियाँ करता है और उसे उलझनों, समस्याओं व विपत्तियों का सामना करना पड़ता है।

प्रश्न 6: सतयुग में किस प्रकार की सद्बुद्धि अपनाई जाती थी और आज उसकी कमी से क्या होता है?

उत्तर 6: प्राचीनकाल में लोग कोई कदम उठाने से पहले उसके दूरगामी परिणामों पर विचार करते थे। औचित्य को अपनाने से वह सुयोग बना रहता था जिसे सतयुग कहते थे। आज उतावले लोग सन्मार्ग का

राजपथ छोड़कर काँटीली झाड़ियों में भटकते हैं, स्वार्थ आपस में टकराते हैं और अनेकानेक समस्याएँ पैदा होती हैं।

प्रश्न 7: दुर्बुद्धि के कारण मनुष्य कैसे जाल में फँस जाता है?

उत्तर 7: जो लोग दूरगामी परिणामों पर विचार न करके केवल तात्कालिक लाभ को सब कुछ मानते हैं, वे चिड़ियों या मछलियों की तरह जाल में फँसते हैं। चाशनी पर आँखें बंद करके टूट पड़ने वाली मक्खियों की तरह उनके पंख फँस जाते हैं और वे बेमौत मरते हैं। जब दुर्बुद्धि का यह कुचक्र तीव्र हो जाता है, तो ऐसी उलझनें खड़ी होती हैं कि लोग विपत्तियों के दलदल से उबर नहीं पाते।

प्रश्न 8: सृष्टि में कर्मफल व्यवस्था को लेकर मनुष्य क्या गलती करते हैं?

उत्तर 8: क्रिया की प्रतिक्रिया होने में अक्सर विलंब लगता है, जिससे कई लोग सोचते हैं कि बुरे कार्यों का परिणाम आना जरूरी नहीं या अच्छे कार्यों का फल नहीं मिलता। वे इसे सृष्टि में कोई नियमित कर्मफल व्यवस्था न होने का अंधेर मानकर स्वेच्छाचार बरतते हैं। वे भूल जाते हैं कि बीज को वृक्ष बनने या दूध को दही बनने में समय लगता है।

प्रश्न 9: ईश्वर ने मनुष्य को विवेक बुद्धि क्यों प्रदान की है और अनुत्तीर्ण होने पर क्या होता है?

उत्तर 9: भगवान ने मनुष्य को उसकी समझदारी जाँचने के लिए अवसर दिया है, ताकि वह उचित-अनुचित का निर्णय कर सकने वाली अपनी विवेक बुद्धि को जागृत करे। इसका सही उपयोग करके औचित्य अपनाए और सही मार्ग पर चले। इस परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने वालों को देर से ही सही, दंड मिलता है और उन्हें पश्चाताप करना पड़ता है।

प्रश्न 10: आजकल मनुष्य के व्यवहार में क्या कमी आई है और इसका क्या परिणाम है?

उत्तर 10: इन दिनों स्नेह, सद्भाव, सहकार और सदाचार की कमी पड़ने से मनुष्य का व्यवहार ऐसा विचित्र बन गया है जिसमें शोषण ही प्रधान दिखाई पड़ता है। व्यक्तिवाद की आपाधापी के कारण लोग दूसरों के अधिकारों को क्षति पहुँचाने या उनके कष्ट-संकट पर ध्यान नहीं देते, बस अपना ही लाभ सूझता है। अनाचार, अत्याचार, शोषण, अपहरण और उत्पीड़न इसी वृत्ति का परिणाम हैं।

प्रश्न 11: 'आत्मवत् सर्व भूतेषु' का क्या अर्थ है और इसे अपनाने से क्या लाभ है?

उत्तर 11: 'आत्मवत् सर्व भूतेषु' का अर्थ है **सबमें अपनी ही आत्मा को देखना**। इसका तात्पर्य है दूसरों के दुःखों को अपना दुःख और दूसरों के सुख को अपना सुख मानना। यदि इस भाव संवेदना को हृदयंगम कर लिया जाए, तो अनाचार बरतना संभव नहीं होगा और मन सेवा-सहायता के लिए चलेगा, दुःख बांटने और सुख बांटने की उदारता बनी रहेगी।

प्रश्न 12: अदूरदर्शिता और अविवेक किस प्रकार मनुष्य के व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं?

उत्तर 12: हर प्रकार के आचरण का मूल कारण अदूरदर्शिता और अविवेक है। दूरवर्ती परिणामों का अनुमान न लगा पाने पर तात्कालिक लाभ ही सब कुछ हो जाता है, भले ही उसमें अनीति क्यों न जुड़ी हो। अदूरदर्शी लोग तुरंत लाभ को सब कुछ मानते हुए किसी भी कीमत पर उसे पूरा करने में जुट जाते हैं। ऐसे लोग अपनी प्रामाणिकता खो बैठते हैं, अविश्वसनीय बन जाते हैं और सच्चे सहयोग के अभाव में एकाकीपन अनुभव करते हैं।

प्रश्न 13: असंयमी और अनाचारी व्यक्ति किस प्रकार अंततः दंडित होते हैं?

उत्तर 13: असंयम बरतने वाले तत्काल न सही, कल-परसों अपनी दुखदायी प्रतिक्रिया से दंडित हुए बिना नहीं रहते। जो दूसरों को ठगता है, उसे किन्हीं अन्यो द्वारा ठगा जाता है। मनुष्य द्वारा किए गए दुर्व्यवहार प्रतिक्रिया बनकर लौटते हैं।

प्रश्न 14: वर्तमान में मनुष्य-मनुष्य के बीच अविश्वास और असहयोग से क्या स्थिति बनी हुई है?

उत्तर 14: मनुष्य-मनुष्य के बीच छाया हुआ छल, अविश्वास, असहयोग और अनाचार विचित्र प्रकार के उद्वेग, असंतोष और दुर्व्यवहार उत्पन्न करते हैं। इसका परिणाम यह है कि धनी-निर्धन, शिक्षित-अशिक्षित सभी को अपनी-अपनी कठिनाइयाँ झेलनी पड़ती हैं। अधिकांश लोग जलते-जलाते, डरते-डराते, उद्विग्न और असंतुष्ट स्थिति में देखे जाते हैं, भले ही उनके पास सुख-साधनों का बाहुल्य हो।

प्रश्न 15: प्रगति के नाम पर मनुष्य ने क्या अवगति की है?

उत्तर 15: प्रगति के नाम पर सुविधा-साधनों की वृद्धि होने के बावजूद, चिंतन, चरित्र और व्यवहार में निकृष्टता भर जाने के कारण जो कुछ चल रहा है, उसे निर्धनों, अशिक्षितों की तुलना में भी अधिक हेय समझा जा सकता है। इसे भले ही प्रगति कहा जाए, पर वास्तव में यह अवगति ही है।

अध्याय 3: निराशा हर स्थिति में हटे

प्रश्न 16: अनाचार अपनाने से प्रकृति पर क्या प्रभाव पड़ता है और इससे क्या संकट उत्पन्न होते हैं?

उत्तर 16: अनाचार अपनाने से प्रत्यक्ष व्यवस्था में अवरोध आता ही है, साथ ही नियतिक्रम के निरंतर उल्लंघन से प्रकृति का अदृश्य वातावरण भी दूषित हो रहा है। भूकम्प, तूफान, बाढ़, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, कलह, विद्रोह, अपराध, भयावह रोग, महामारियाँ जैसे त्रास तेजी से बढ़ रहे हैं, जिन पर नियंत्रण पाना असंभव प्रतीत होता है।

प्रश्न 17: महामानव-देवदूत किन्हें कहा जाता है और उनकी क्या विशेषताएँ होती हैं?

उत्तर 17: जो व्यक्ति आँधी-तूफानों के बीच भी अपनी आशा का दीपक जलाए रख सकते हैं। जो सृजन प्रयोजनों के लिए सहयोग न मिलने पर भी सुधार की संभावना के लिए एकाकी साहस संजोए रहते हैं, उलटे को सीधा करने की योजना बनाते और कार्य करते हुए अडिग रहते हैं। ऐसे व्यक्तियों को महामानव-देवदूत कहा जाता है, पर वे यदाकदा ही प्रकट होते हैं।

प्रश्न 18: निराशा को एक बीमारी क्यों कहा गया है और इसके क्या नकारात्मक प्रभाव हैं?

उत्तर 18: निराशा हल्के दर्जे की बीमारी नहीं है; जहाँ यह जड़ जमाती है, वहाँ घुन की तरह मजबूत शहतीर को भी खोखला कर देती है। निराशा अपने साथ हार, खीझ और थकान लाती है। इससे दबा हुआ आदमी स्वयं तो टूटता ही है, दूसरों को भी तोड़ता है। यह शक्ति का अपहरण करती है, जीवनी शक्ति घटाती है, तनाव बढ़ाती है और रचनात्मक उपाय सोचने से रोकती है। निराश व्यक्ति जीत की संभावना को नकारकर जीती बाजी हारते हैं।

प्रश्न 19: निराशा को दूर करने के लिए क्या आवश्यक है?

उत्तर 19: निराशा को छोटी बात न मानकर उसके निराकरण का हर क्षेत्र में प्रयत्न करना आवश्यक है। उत्साह और साहस जीवित बने रहें, तभी प्रगति के प्रयोजनों को कार्यान्वित करना संभव होगा। उज्ज्वल भविष्य की संरचना को ध्यान में रखते हुए, जहाँ भी निराशा का माहौल हो, उसे दूर करने के हर संभव उपाय करने चाहिए। यह तभी संभव है जब उज्ज्वल भविष्य की आशा भरी कल्पनाएँ करते रहने का आधार खड़ा किया जाए।

प्रश्न 20: इतिहास में निराशा को आशा में बदलने के कुछ उदाहरण दीजिए।

उत्तर 20: इतिहास में ऐसे अनेक प्रकरण भरे पड़े हैं। हनुमान के नेतृत्व में रीछ-वानरों ने समुद्र सेतु बाँधने और लंकादमन का विश्वास लेकर दुर्दान्त दानवों को परास्त किया। ग्वाल-बालों ने कृष्ण के संकेत पर गोवर्धन पर्वत उठा सकने का विश्वास जमाया। फ्रांस की 'जोन ऑफ आर्क' ने दमित जनता में स्वतंत्रता की ज्योति जलाई। लेनिन ने रूस में, बुद्ध ने धर्मचक्र प्रवर्तन से और गांधी ने सत्याग्रह से जनमानस में उत्साह भरा।

प्रश्न 21: कृष्ण ने अर्जुन की निराशा कैसे दूर की थी?

उत्तर 21: अर्जुन का मन युद्ध न लड़ने के लिए हारा हुआ था और वह अनेक तर्क प्रस्तुत कर रहा था। कृष्ण ने उसे कहा कि "कौरवों को तो मैंने पहले ही मार रखा है, वे तो मृतकवत हैं। तू तो निमित्त मात्र बनने की भूमिका निभा और विजयश्री का वरण कर"। कृष्ण के वचनों पर पूर्ण विश्वास करके अर्जुन सभी उलझनों और मोह को त्यागकर तत्काल युद्ध में प्रवृत्त हो गया।

प्रश्न 22: आज के समय में किस प्रकार का जनमानस निर्मित करना आवश्यक है?

उत्तर 22: आज ध्वंस को सृजन में बदलने और अनौचित्य को औचित्य का अंकुश स्वीकार कराने के लिए ऐसा जनमानस निर्मित करना पड़ेगा, जो भय, आतंक, अशुभ और विनाश की मानसिकता से उबारे। यह आवश्यक परिवर्तन कर सकने की शक्ति पर सबका विश्वास जमा सके। साथ ही, भविष्य की संभावना के संबंध में असमंजस को छोड़कर यह विश्वास हृदयंगम कराए कि औचित्य-अनौचित्य पर विजय प्राप्त की जा सकती है।

अध्याय 4: अपने युग की असाधारण महाक्रान्ति

प्रश्न 23: महाक्रांतियाँ किसे कहते हैं और उनके कुछ पौराणिक उदाहरण क्या हैं?

उत्तर 23: जब कोई बड़ा परिवर्तन व्यापक क्षेत्र में तीव्र गति से होता है, तो उसे क्रांति कहते हैं। कुछ महाक्रांतियाँ चिरकाल तक जनमानस पर प्रभाव बनाए रखती हैं। पौराणिक युग में रावण दमन, राम राज्य स्थापना और महाभारत आयोजन ऐसी महाक्रांतियों के उदाहरण हैं। ये केवल सृजन और संतुलन के लिए उभरती हैं।

प्रश्न 24: इतिहास काल की कुछ प्रमुख महाक्रांतियाँ कौन सी थीं?

उत्तर 24: इतिहास काल में बुद्ध का धर्मचक्र प्रवर्तन एक प्रमुख महाक्रांति थी। इसके अलावा, साम्यवाद और प्रजातंत्र की सशक्त विचारणा का विस्तार, तथा दास प्रथा की समाप्ति भी ऐसे ही प्रसंग हैं, जिनकी घटना से पहले कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था। इन घटनाओं ने युग परिवर्तन की भूमिका निभाई।

प्रश्न 25: पिछले महान परिवर्तनों को आमतौर पर किस नाम से जाना जाता था?

उत्तर 25: पुरातन-कालों में असम्भव को सम्भव कर दिखाने वाले महापराक्रमों को अक्सर 'अवतार' की संज्ञा देकर संतोष कर लिया जाता था। ऐसे महान परिवर्तनों को युगान्तरीय या युग परिवर्तनकारी भी कहा जाता रहा है। यह माना जाता था कि मनीषा जब आदर्शवादी ऊर्जा से अनुप्राणित होती है, तो दैवी अनुग्रह से ऐसे कार्य कर दिखाती है।

प्रश्न 26: वर्तमान महाक्रांति का स्वरूप समग्र रूप से परिलक्षित होने में कितना समय लग सकता है?

उत्तर 26: वर्तमान महाक्रांति का स्वरूप समग्र रूप से परिलक्षित होने में प्रायः सौ वर्ष का समय महत्वपूर्ण होगा। यद्यपि इसका तारतम्य काफी पहले से चल रहा है और पूरी तरह चरितार्थ होने के बाद भी कुछ समय तक चलता रहेगा। इसे पिछले समस्त परिवर्तनों की संयुक्त शक्ति का एकात्म समीकरण कहा जा सकता है।

प्रश्न 27: भारत को गुलामी से छुटकारा कैसे मिला और उपनिवेशवाद का अंत कैसे हुआ?

उत्तर 27: प्रायः दो हजार वर्षों से चले आ रहे आक्रमणों से भारत को छुटकारा मिला, जब महाक्रांति ने अपना स्वरूप प्रकट किया। दो विश्व युद्धों ने अहंकारियों की कमर तोड़ दी और दिखा दिया कि विनाश पर उतारू

होने वाली कोई भी शक्ति नफे में नहीं रह सकती। भारत में लम्बे समय से चली आ रही राजनैतिक पराधीनता का जुआ देखते-देखते उतार फेंका गया। इसके अतिरिक्त, अफ्रीका महाद्वीप के अधिकांश देश और छोटे-छोटे द्वीप भी साधारण प्रयत्नों से स्वतंत्र हो गए, जिससे उपनिवेशवाद समाप्त हो गया।

प्रश्न 28: सामाजिक क्रांति के परिणामस्वरूप किन पुरानी कुप्रथाओं का अंत हुआ?

उत्तर 28: सामाजिक क्रांति के परिणामस्वरूप दास-दासियों की लूट-खसोट, खरीद-फरोख्त समाप्त हुई, जो इतने पुराने प्रचलन थे। राजतंत्र और सामंतवाद का बोलबाला खत्म हो गया, और अमीर-उमराव छत्रप नहीं रहे। स्त्री और शूद्र के रूप में जो तीन-चौथाई जनता सम्मान रहित जीवन यापन करती थी, वह स्थिति अब नहीं रही। "नर और नारी एक समान" तथा "जाति वंश सब एक समान" के सिद्धांत विश्व के अधिकांश भागों में स्वीकार कर लिए गए हैं।

प्रश्न 29: वर्तमान युग में नीति और अनिति के बीच के संघर्ष का क्या परिणाम बताया गया है?

उत्तर 29: इन दिनों नीति और अनिति के बीच घमासान युद्ध हो रहा है, जिसमें कुहराम और धकापेल का माहौल है। सामान्य व्यक्ति को यह समझ नहीं आता कि क्या हो रहा है और कौन जीत रहा है। लेकिन जो अदृश्य को देख सकते हैं, वे सुनिश्चित आधारों पर विश्वास करते हैं कि सृजन ही जीतेगा, सत्य की ही विजय होनी है और उज्ज्वल भविष्य का दिनमान उदय होकर ही रहेगा।

प्रश्न 30: महाक्रांति के वर्तमान दौर में क्या हो रहा है, इसे सामान्य व्यक्ति क्यों नहीं देख पा रहा?

उत्तर 30: महाक्रांति के वर्तमान दौर में क्या हो रहा है, क्या होने जा रहा है, क्या बन रहा है या बिगड़ रहा है, यह ठीक तरह से देख पाना सर्वसाधारण के लिए संभव नहीं है। जैसे अखाड़े में दो पहलवानों को लड़ते देख दर्शक तुरंत निर्णय नहीं कर पाते कौन हार रहा है। वर्तमान में बिगड़ अधिक और सुधार की गति धीमी दिखती है, फिर भी प्रवाह की गति को देखते हुए हम आगे बढ़ रहे हैं। निष्कर्ष यह है कि अनौचित्य का समापन और औचित्य का अभिवर्धन ही होगा।

प्रश्न 31: महाक्रांति सदा किस उद्देश्य से उभरती है और इसके प्रभाव क्या होते हैं?

उत्तर 31: महाक्रांति सदा सृजन और संतुलन के निमित्त उभरती है। पतन और पराभव की विडम्बनाएँ तो कुसंस्कारी वातावरण आए दिन रचता रहता है। जब महाक्रांतियाँ असंतुलन को संतुलन में बदलने के लिए उभरती हैं, तो उसका प्रभाव परिणाम ऊर्ध्वगमन, उत्कर्ष, अभ्युदय के रूप में ही होता है। इससे यह विश्वास किया जा सकता है कि भविष्य उज्ज्वल है और हम शांति व प्रगति के लक्ष्य की दिशा में चल रहे हैं।

अध्याय 5: चौथी शक्ति का अभिनव उद्भव

प्रश्न 32: परंपरागत रूप से समाज में किन तीन शक्तियों को प्रधान माना जाता है?

उत्तर 32: परंपरागत रूप से समाज में तीन शक्तियों की प्रभुता और महत्ता सर्वविदित है: (1) बुद्धि बल, जिसमें विज्ञान, साहित्य और कला शामिल हैं; (2) शासन सत्ता, जिसके अंतर्गत व्यवस्था, सुरक्षा और संबंधित साधन व अधिकारी आते हैं; और (3) धन शक्ति, जिसमें उद्योग, व्यवसाय, निजी संग्रह व बैंक आदि सम्मिलित हैं। इन्हीं तीनों के सहारे सभी कार्य संपन्न होते हैं और प्रगति या अवगति का श्रेय इन्हें ही मिलता है।

प्रश्न 33: नवयुग के अवतरण में किस चौथी शक्ति का उदय होगा?

उत्तर 33: नवयुग के अवतरण में "प्रखर प्रतिभा" नामक चौथी शक्ति का उदय होगा। यह शक्ति अभी भी कहीं-कहीं जीवित तो है, पर उसका वर्चस्व कम ही दिखता है। इसी की दुर्बलता के कारण अनेक विकृतियाँ फैल गई हैं। प्रखरता से यहाँ तात्पर्य आदर्शवादी उत्कृष्टता से है, जिसके धनी सज्जन और समर्पित संत होते हैं।

प्रश्न 34: 'प्रखर प्रतिभा' सामान्य प्रतिभा से किस प्रकार भिन्न है?

उत्तर 34: सामान्य प्रतिभा वाले व्यक्ति धन, यश या बड़प्पन का अर्जन अपने निजी हेतु करते हैं और आतंक भी पैदा कर सकते हैं। जबकि 'प्रखर प्रतिभा' संकीर्ण स्वार्थपरता से ऊँची उठी होती है। उसमें मानवी गरिमा का ध्यान रहता है और आदर्शों के प्रति अनन्य निष्ठा होती है। उसे लोक मंगल और सत्प्रवृत्ति संवर्धन में गहरी रुचि रहती है।

प्रश्न 35: प्रखर प्रतिभा संपन्न लोग समाज के लिए क्या योगदान देते हैं?

उत्तर 35: प्रखर प्रतिभा संपन्न लोग जन-समस्याओं पर विचार करते हैं और उनके समाधान की योजनाएँ बनाते रहते हैं। भावनाएँ उभरने पर ऐसे मनुष्य बड़े से बड़ा त्याग और पुरुषार्थ करने में तत्पर हो जाते हैं। यदि वे असफल रहते हैं, तो शहीदों में गिने जाते हैं; सफल होते हैं, तो इतिहास बदल देते हैं। प्रवाहों को उलटना इन्हीं का काम होता है।

प्रश्न 36: इक्कीसवीं सदी में नई दुनिया बनाने के लिए किस शक्ति की आवश्यकता होगी?

उत्तर 36: इक्कीसवीं सदी में नई दुनिया बनाने जैसे कठिन कार्य के लिए प्रचुर मात्रा में प्रखर प्रतिभा का उफान आना है। अनेक व्यक्ति इस संदर्भ में कार्य करेंगे। दैवी प्रेरणा का अदृश्य प्रवाह ऐसा आएगा जिसमें सृजन सैनिकों की विशालकाय सेना खड़ी दिखाई देगी और चमत्कार करेगी, जैसे जापान ने अणुबम गिराने के बाद खुद को बेहतर बनाया।

प्रश्न 37: पिछली शताब्दी में मानव की दुर्बुद्धि के कारण क्या नकारात्मक परिवर्तन हुए?

उत्तर 37: पिछली एक शताब्दी में दुर्बुद्धि ने भारी कहर ढाया। दो विश्व युद्ध हुए, प्रदूषण अत्यधिक बढ़ा, वन नष्ट हुए और रेगिस्तान बढ़े। अपराधों की बढ़ोत्तरी हुई, नशेबाजी, मांस और व्यभिचार ने पिछले रिकॉर्ड तोड़ दिए। जनसंख्या असाधारण रूप से बढ़ी, असंयम और अनाचार फैशन बन गया, तथा प्राकृतिक प्रकोपों में वृद्धि हुई।

प्रश्न 38: इक्कीसवीं सदी में किस प्रकार का नया प्रवाह देखने को मिलेगा?

उत्तर 38: अब रात्रि के बाद दिनमान का उदय होने जा रहा है, और दूसरे स्तर का प्रवाह चलेगा। मनुष्यों में से असंख्य लोगों में भाव संवेदनाओं का उभार आएगा, और वे सभी सृजन, सेवा, उत्थान तथा आदर्श की बात सोचेंगे। गर्मी के बाद वर्षा में हरियाली छाने की तरह, नवयुग का दैवी प्रवाह अदृश्य वातावरण में ऊर्जा का विस्तार करेगा, जिससे लोग अपनी सामर्थ्य का महत्वपूर्ण भाग नव-सृजन के लिए नियोजित करेंगे।

प्रश्न 39: नवयुग में प्रखर प्रतिभा के उद्यान कैसे विकसित होंगे?

उत्तर 39: इक्कीसवीं सदी निकट है, और तब तक इस अवधि में प्रखर प्रज्ञा के अनेक छोटे-बड़े उद्यान रोपे, उगाए, बढ़ाए और इस स्तर तक पहुँचाए जा सकेंगे, जिन्हें नंदन वनों के समतुल्य या कल्पवृक्ष उद्यानों की उपमा दी जा सके। यह श्रेष्ठ मनुष्यों का बाहुल्य होगा, जिसे सतयुग या स्वर्ग कहते हैं, जहाँ दुर्बुद्धि का स्थान सदाशयता ले लेगी।

अध्याय 6: चार चरण वाला युग-धर्म

प्रश्न 40: इक्कीसवीं सदी में सर्वसाधारण के जीवन में कौन से चार अनुबन्धों का समावेश होगा?

उत्तर 40: इक्कीसवीं सदी में सर्वसाधारण के जीवन में चार अनुबन्धों का सघन समावेश होगा: (1) समझदारी (2) ईमानदारी (3) जिम्मेदारी (4) बहादुरी। इन चारों आदर्शों को चार वेदों का सार तत्व समझा जा सकता है और यही धर्म के चार चरण रहेंगे। अभिनव समाज और परिष्कृत वातावरण की संरचना इन्हीं आदर्शों को

अपनाते हुए की जाएगी।

प्रश्न 41: 'समझदारी' का क्या अर्थ है और नासमझी से क्या हानियाँ होती हैं?

उत्तर 41: समझदारी का अर्थ है अपने कृत्यों के दूरगामी परिणामों को ध्यान में रखना। तुरंत का लाभ देखकर उस पर बेहिसाब टूट पड़ना और भविष्य के दुष्परिणामों को न समझ पाना ही नासमझी है। यह नासमझी ही अनेक समस्याओं, कठिनाइयों, विपत्तियों और विभीषिकाओं का मूलभूत कारण है। असंयमी, प्रमादी और अहंकारी लोग तत्काल के लाभ देखते हुए अपनी प्रामाणिकता और व्यक्तित्व खो बैठते हैं।

प्रश्न 42: 'ईमानदारी' को कैसे परिभाषित किया जा सकता है और इसका सबसे अच्छा न्यायाधीश कौन है?

उत्तर 42: ईमानदारी की समग्र परिभाषा है कि "दूसरों से अपने लिए जिस प्रकार के व्यवहार की आशा करते हैं, वैसा ही व्यवहार दूसरों के साथ करना"। हम दूसरों से स्नेह, सहयोग, सद्भाव और सद्भावहार की अपेक्षा करते हैं, और ठीक वैसा ही व्यवहार दूसरों के साथ करते रहें। ईमानदारी का सबसे सुयोग्य न्यायाधीश अपनी आत्मा ही हो सकती है, जिससे बार-बार पूछकर न्याय के सिद्धांत को अपनाया जा सके।

प्रश्न 43: 'जिम्मेदारी' का क्या महत्व है और इसे निभाने से क्या लाभ मिलते हैं?

उत्तर 43: मनुष्य अनेक

उत्तरदायित्वों से बँधा है। शरीर को स्वच्छ रखने के लिए आहार-विहार का पालन, मन को संतुलित रखने के लिए सद्भावनाएँ, आर्थिक कठिनाई न बढ़ने देने के लिए नागरिक निर्वाह, और परिवार को सुयोग्य बनाने के प्रयास, ये सब जिम्मेदारियाँ हैं। इनका ठीक तरह से पालन करने पर ही कोई सुखी, समुन्नत रह सकता है और संपर्क क्षेत्र को प्रसन्न बना सकने का श्रेय पा सकता है।

प्रश्न 44: मनुष्य को सृष्टि के युवराज के रूप में स्रष्टा ने कौन सा

उत्तरदायित्व सौंपा है?

उत्तर 44: स्रष्टा ने मनुष्य को अपने ज्येष्ठ पुत्र-युवराज के रूप में सृजा और सृष्टि को सुव्यवस्थित, समुन्नत, सुसंस्कृत बनाने का

उत्तरदायित्व सौंपा। इस

उत्तरदायित्व को पूरा करने में निरत रहकर ही वह जीवन लक्ष्य प्राप्त कर सकता है और देव मानव स्तर को भी प्राप्त कर सकता है।

प्रश्न 45: 'बहादुरी' का प्राचीन और अर्वाचीन अर्थ क्या है?

उत्तर 45: पहले किसी को हराने या गिरा देने को बहादुरी कहा जाता था। लेकिन अब वह रीति मानवी गरिमा से बहिष्कृत की जा रही है। बहादुरी का प्राचीनतम और अर्वाचीन अर्थ एक ही है: "ऐसे पराक्रम कर गुजरना, जिससे अपनी महानता उभरती है, और समय, समाज, संस्कृति की छवि निखरती है"। सत्प्रवृत्तियों के संवर्धन और दुष्प्रवृत्तियों के उन्मूलन की आवश्यकता इस समय सबसे अधिक है।

प्रश्न 46: सच्चे शूरवीर कौन होते हैं?

उत्तर 46: सच्चे शूरवीर वे हैं जो दुष्कर्मों, अंधविश्वासों, अनाचारों, कुसंग और अवांछनीय वातावरण का सामना करते हुए अपने आप को उच्चस्तरीय आदर्शवादिता अपनाने के लिए तत्पर हो सकें। जो लोकहित के लिए संगठित और कटिबद्ध होते हैं, वे बुद्ध के धर्मचक्र प्रवर्तन और गाँधी के सत्याग्रह आंदोलनों में सम्मिलित होने वालों की तरह सज्जनों का समुदाय जमा कर लेते हैं। हनुमान और अंगद जैसे महामानवों की बहादुरी सराही जाती है।

प्रश्न 47: अगले दिनों में धर्म-दर्शन और अध्यात्म-तत्व दर्शन के नियम किस प्रकार बदलेंगे?

उत्तर 47: अगले दिनों धर्म-दर्शन, अध्यात्म-तत्त्व दर्शन के अनेक नियम पूरी तरह बदल जाएँगे। समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी के चार चरणों की परिधि में उत्कृष्टता के समस्त सिद्धांत समाहित हो जाएँगे। इस छोटे धर्मशास्त्र से भी युग समस्याओं का समाधान संभव हो सकेगा।

अध्याय 7: अगली शताब्दी का अधिष्ठाता—सूर्य

प्रश्न 48: पृथ्वी को 'स्वर्गादपि गरीयसी' क्यों कहा गया है?

उत्तर 48: इस ब्रह्मांड में पृथ्वी जैसा सुंदर, सुव्यवस्थित और अगणित विशेषताओं वाला कोई अन्य ग्रह नहीं खोजा जा सका है। स्वर्ग लोक की कल्पना में भी इतनी विशेषताएँ और विचित्रताएँ नहीं हैं जितनी भू-लोक में विद्यमान हैं। प्रकृति शोभा, प्राणी समुदाय, वृक्ष, वनस्पति और ऋतुओं का परिवर्तन अन्यत्र कहीं संभव नहीं, और मनुष्य जैसा प्राणी दुर्लभ है। इसीलिए इसे 'स्वर्गादपि गरीयसी' नाम दिया गया है।

प्रश्न 49: पृथ्वी पर जीवन के लिए सूर्य का क्या महत्व है?

उत्तर 49: सूर्य से पृथ्वी की सुनिश्चित दूरी इतनी सही-सार्थक है कि उसी संतुलन के कारण पृथ्वी पर जीवन संभव हुआ। यदि दूरी कम होती, तो पृथ्वी अग्नि पिंड जैसी होती; अधिक दूर होती, तो शीत की अधिकता से जीवन नहीं होता। तत्त्वदर्शी और वैज्ञानिक भी स्वीकार करते हैं कि "सूर्य आत्मा जगतः तस्थुषश्च" अर्थात् "सूर्य ही जगत की आत्मा है"। सूर्य की किरणें ही उत्साह, पराक्रम, और प्राणियों व वनस्पतियों में हलचल उत्पन्न करती हैं।

प्रश्न 50: रंग और रसायन के निर्माण में सूर्य की क्या भूमिका है?

उत्तर 50: वैज्ञानिक मानते हैं कि रंगकर्मी अकेला सूर्य है, जिसने वसुधा के विभिन्न घटकों को अपनी योजनानुसार चित्रशाला की तरह रंग भरा है। जो वस्तु या पौधा सूर्य की किरणों में विद्यमान जिन रंगों को अवशोषित नहीं कर पाता, वह उसी रंग का बन जाता है। धरती पर उपलब्ध रसायन, जिनसे वनस्पतियों और प्राणियों की काया बनती है, सूर्य और पृथ्वी के संयोग से ही विनिर्मित होते हैं। सूर्यप्रभा में धातुओं के निर्माण की क्षमता भी है।

प्रश्न 51: मनुष्य की जीवनी शक्ति और स्वास्थ्य का सूर्य से क्या संबंध है?

उत्तर 51: मानवी जीवनी शक्ति सूर्य से ही प्राप्त अनुदान है। इसके अभाव में ही आदमी रोगी होता है। मनुष्य शरीर में विभिन्न प्रकार के जीव कोश, ऊतक, धार, प्रोटीन, स्राव, हार्मोन, विटामिन्स आदि की भिन्नताएँ इस कारण होती हैं कि अमुक स्थानों तक सूर्य का प्रभाव किस स्तर का, किस मात्रा में, किस गति से पहुँचता है और किन घटकों के साथ मिलकर क्या प्रतिक्रिया उत्पन्न करता है।

प्रश्न 52: सूर्य के आध्यात्मिक स्वरूप 'सविता' का क्या महत्व है?

उत्तर 52: सूर्य का एक रूप तो उसकी चमक और गर्मी है, जबकि दूसरा उसका आध्यात्मिक स्वरूप है, जिसे अध्यात्म-भाषा में 'सविता' कहते हैं। यह जड़ अग्नि पिंड नहीं, बल्कि सचेतन प्राण शक्ति है, जो आवाहन करने पर साधक में ओजस्, तेजस्, वर्चस् प्रदान करने में समर्थ है। कुंती ने इसी शक्ति का आवाहन करके सूर्य पुत्र कर्ण को जन्म दिया था।

प्रश्न 53: नवयुग में जनमानस के परिष्कार के लिए सविता चेतना शक्ति का प्रयोग कैसे किया जाएगा?

उत्तर 53: नवयुग में जनमानस को परिष्कृत करने और प्रखर प्रतिभा के संवर्धन के लिए सविता की चेतना शक्ति का प्रयोग अभीष्ट होगा। इसके लिए इन दिनों भी उच्चस्तरीय आत्माएँ अपने सूक्ष्म शरीर से विशेष प्रयोग-प्रदान कर रही हैं। सार्वजनिक प्रयोग के रूप में शांतिकुंज में युग संधि वेला में ऐसा ही एक महापुरश्चरण

चल रहा है, जो शारदेय नवरात्र 1988 से दिसंबर 2000 तक चलेगा।

प्रश्न 54: दार्शनिक आर्थर कौस्लर ने आणविक शक्ति से निपटने के लिए क्या आध्यात्मिक उपचार सुझाया था?

उत्तर 54: प्रसिद्ध दार्शनिक आर्थर कौस्लर ने अणु-आयुधों से उद्भूत रेडियोधर्मिता से जूझने के लिए आध्यात्मिक उपचारों का आश्रय लेने की बात कही थी। उन्होंने 'ब्लिट्ज' पत्रिका के संपादक से चर्चा में बताया था कि अणु-आयुधों से भी बढ़कर सामर्थ्य गायत्री मंत्र में है। उनका कहना था कि जब विश्व के करोड़ों भारतीय गायत्री मंत्र का समवेत उच्चारण पुरश्चरण के रूप में करेंगे, तो उससे उत्पन्न ऊर्जा आणविक शक्ति को नष्ट कर देगी।

प्रश्न 55: सूर्य विज्ञान का भविष्य में किस प्रकार उपयोग होगा?

उत्तर 55: अगले दिनों सूर्य विज्ञान को प्रमुखता प्राप्त होगी। उसका न केवल पदार्थ शक्ति के रूप में प्रयोग होगा, वरन् मानसोपचार के रूप में भी काम में लाया जा सकेगा। सूर्य नमस्कार, सूर्यभेदन प्राणायाम, सूर्योपस्थान जैसे विधि उपचारों के असंदिग्ध परिणाम सूर्य की शक्ति पर विश्वास जमाते हैं। भविष्य में सूर्य की विशिष्ट क्षमताओं पर शोधें होंगी जिन्हें झुठलाया न जा सके।

प्रश्न 56: सार्वजनीन सूर्य उपासना विधि क्या है?

उत्तर 56: सार्वजनीन उपासना प्रावधान के तहत ब्रह्म मुहूर्त में शरीर और मन से शुद्ध होकर नेत्र बंद करके प्रातःकालीन उदीयमान स्वर्णिम सविता का ध्यान करना चाहिए। भावना करें कि स्वर्णिम सूर्य किरणें शरीर में प्रवेश कर रही हैं और उसकी स्थिति चंद्रमा जैसी बन रही है। यह ज्योति संसार में बिखरकर अमृत ज्योति से भरा-पूरा वातावरण बना रही है, जिससे पदार्थ और प्राणी अनुप्राणित हो रहे हैं और अवांछनीयताएँ विदा हो रही हैं।

अध्याय 8: महाकाल की संकल्पित सम्भावनाएँ

प्रश्न 57: महाकाल की इच्छा शक्ति जुड़ जाने पर परिवर्तन की गति कैसी हो जाती है?

उत्तर 57: मनुष्य की अपनी क्षमता की सीमाएँ हैं, लेकिन यदि अदृश्य प्रगति प्रवाह की इच्छा शक्ति उसके साथ जुड़ जाए, तो परिवर्तन इतनी तेजी से होते हैं कि आश्चर्यचकित रह जाना पड़ता है। हजारों वर्षों में होने वाले काम दशकों, वर्षों या महीनों में संपन्न होने लगते हैं। यह उपक्रम अव्यवस्था हटाकर व्यवस्था बनाने के लक्ष्य के तहत होता है।

प्रश्न 58: महाकाल के संकल्प से पिछली सदियों में क्या बड़े परिवर्तन हुए हैं?

उत्तर 58: पिछली सदियों में सदियों पुरानी परंपराओं में आमूल-चूल परिवर्तन हुए हैं। भारत ने हजारों वर्ष पुरानी गुलामी का जुआ कुछ ही समय में हलके-फुलके आंदोलन के सहारे उतार फेंका। भूपतियों का अधिकार छिन गया और निरीह प्रजाजन भूमिधर बन बैठे। दास-दासियों का क्रय-विक्रय और पति के शव के साथ जीवित पत्नियों को जलाने जैसी कुप्रथाएँ समाप्त हो गईं। अस्पृश्यता का पुराना स्वरूप भी कहीं नहीं दिखता।

प्रश्न 59: विज्ञान की प्रगति ने किन क्षेत्रों में चमत्कार दिखाए हैं?

उत्तर 59: विज्ञान की उमंग से दो-तीन शताब्दियों में ही रेल, मोटर, जलयान, वायुयान, बिजली आदि ने धरती के कोने-कोने में प्रभुता का परिचय दिया। अंतरिक्ष में उपग्रह चक्कर काटने लगे, रेडियो, टेलीविजन आम हो गए। रॉकेटों ने इतनी गति पकड़ी है कि वे धरती के एक कोने से दूसरे पर पहुँच जाते हैं। रोबोटों और कंप्यूटरों ने मानवीय श्रम और मस्तिष्क की उपयोगिता को चुनौती दी है। अणु आयुधों का कहना है कि वे करोड़ों वर्ष पहले बनी धरती को क्षण भर में धूल बना सकते हैं।

प्रश्न 60: इक्कीसवीं सदी की शुभ संभावनाएँ किस प्रकार दिख रही हैं?

उत्तर 60: इक्कीसवीं सदी की शुभ संभावनाएँ हरी दूब की तरह अपनी उगती पत्तियों के स्तर तक पहुँच रही हैं। वसंत ऋतु के पुष्प-पल्लवों की तरह, अनायास ही वे अपने वैभव का परिचय दे रही हैं। नस-नस में भरी कृपणता और लोभ लिप्सा पर अंकुश लग रहा है। महाकाल की हुँकारें और युग चेतना का आलोक बता रहा है कि युग अवतरण की संभावना अद्भुत है।

प्रश्न 61: ग्राम पंचायतों को विशेष अधिकार मिलने की घटना को क्यों असाधारण माना गया है?

उत्तर 61: मई 1989 में ग्राम पंचायतों को विशेष अधिकार देने की बात अचानक बन गई थी। ग्रामीण स्वराज्य गांधीजी का सपना था, पर किसी को भरोसा नहीं था कि 89 में इतने क्रांतिकारी परिवर्तन इतनी सरलता से हो गुजरेंगे। सामान्यतः राज्य परिवर्तन खून-खराबे के बिना नहीं होते, पर सत्ता का निर्धनों और पिछड़ों के हाथों में इतनी आसानी से जाना, इसे मानवी अंतराल का उफान या महाकाल का विधान कहा जा सकता है, जो असंभव होते हुए भी संभव हो रहा है।

प्रश्न 62: भविष्य में सहकारी आंदोलन से क्या लाभ होगा?

उत्तर 62: दूरदर्शी आँखें देख सकती हैं कि पंचायत राज्य के बाद सहकारी आंदोलन पनपेगा और भ्रष्टाचार की ठेकेदारी अपना रास्ता नापती दिखेगी। जब सहकारिता के आधार पर अर्थव्यवस्था चलेगी, तो बिचौलियों द्वारा धन हड़प लिए जाने की संभावना लुंज-पुंज होकर रह जाएगी। इससे उन अंधेरी शक्तियों पर अंकुश लगेगा जो प्रगति योजनाओं को निगल जाती हैं।

प्रश्न 63: प्रौढ़ शिक्षा की समस्या का समाधान भविष्य में कैसे होगा?

उत्तर 63: प्रौढ़ शिक्षा की समस्या का हल अगले दिनों इस प्रकार निकलेगा कि शिक्षितों को अपने समीप के अशिक्षितों में से एक-दो को साक्षर बनाने के लिए बाधित होना पड़ेगा। वर्तमान में अशिक्षितों में विद्या अर्जन की अभिरुचि की कमी है और सरकारी धन से इतनी बड़ी व्यवस्था की उम्मीद नहीं की जा सकती।

प्रश्न 64: भविष्य में समाज में 'श्रमशीलों' का सम्मान कैसे बढ़ेगा?

उत्तर 64: हराम की कमाई खाने वालों को जब अपराधी माना जाएगा और तिरस्कृत किया जाएगा। दूसरी ओर, श्रमशीलों को पुण्यात्मा मानकर उन्हें मान-महत्व दिया जाएगा। इस माहौल में वे अपराधी साफ हो जाएँगे जो समय तो काटते हैं, पर उपार्जन में योगदान नहीं देते। परिश्रम की कमाई को ही ग्राह्य समझा जाएगा, तो दहेज प्रथा, अपव्यय, और अहंकार जैसी अव्यवस्थाएँ खत्म हो जाएँगी।

प्रश्न 65: नवयुग के निर्माण में मनुष्य की क्या भूमिका होगी?

उत्तर 65: नियति की अभिलाषा है कि मनुष्यों में से अधिकांश प्रतिभावान उभरें। वे अपने चरित्र और कर्तृत्व से अनेक को अनुकरण की प्रबल प्रेरणाएँ प्रदान करें। अवांछनीय लालच से छुटकारा पाकर औसत नागरिक स्तर का निर्वाह स्वीकार करने वालों के पास इतना श्रम-समय, मानस और वैभव बचा रहेगा, जिसे नवसृजन के लिए नियोजित करने पर इक्कीसवीं सदी की सुखद संभावनाएँ फलित होंगी।

प्रश्न 66: इक्कीसवीं सदी को 'उज्ज्वल भविष्य' क्यों कहा गया है?

उत्तर 66: 'इक्कीसवीं सदी बनाम उज्ज्वल भविष्य' का उद्घोष मात्र नारा नहीं है, इसके पीछे महाकाल का प्रचंड संकल्प सन्निहित है। यह प्रतिभा परिष्कार के रूप में देखा जा सकेगा। अगले दिनों इस कोयले की खदान में ही बहुमूल्य मणिमुक्तक उभरते और चमकते दिखाई देंगे। नवयुग का भवन बन रहा है और वह बनकर रहेगा।

अध्याय 9: परिवर्तन प्रक्रिया का सार-संक्षेप

प्रश्न 67: उन्नीसवीं और बीसवीं सदी के अंतिम चरण में कालचक्र की गति कैसी रही है?

उत्तर 67: उन्नीसवीं शताब्दी से आरंभ होकर बीसवीं सदी के अंतिम चरण तक कालचक्र अत्यंत द्रुतगति से घूमा है। जितना भला-बुरा पिछले हजारों वर्षों में नहीं बन पड़ा, वह इस अवधि में हो चला।

प्रश्न 68: बीसवीं सदी की कुछ प्रमुख उपलब्धियाँ क्या थीं?

उत्तर 68: बीसवीं सदी में प्रगति के नाम पर असाधारण महत्व के आविष्कार हुए। बुद्धि की तीक्ष्णता पर आधारित प्रतिपादन, शिक्षा और चिकित्सा में नए निर्धारण, विशालकाय कल-कारखाने स्थापित हुए। युद्ध सामग्री का उत्पादन, अंतरिक्ष की खोज, अनेक राज्य क्रांतियाँ और भारत सहित कई देशों को स्वतंत्रता मिलना, ये सभी इसी समय की उपलब्धियाँ थीं।

प्रश्न 69: बीसवीं सदी में हुई कुछ प्रमुख अवगतियाँ (नकारात्मक घटनाएँ) क्या थीं?

उत्तर 69: बीसवीं सदी में अवगति के नाम पर दो विश्व युद्ध हुए, जापान पर अणुबम गिराए गए और लगभग 100 छोटे युद्ध लड़े गए। नशेबाजी चरम सीमा तक पहुँची, व्यभिचार सामान्य लोकाचार बन गया, जिससे पारिवारिक सघनता को चोट पहुँची। जनसंख्या असाधारण रूप से बढ़ी, असंयम और अनाचार फैशन बन गया, प्रकृति प्रकोपों में वृद्धि हुई, और कुरीतियों व मूढ़ मान्यताओं का बोलबाला रहा। कुल मिलाकर, बीसवीं सदी घाटे की रही, उसमें बना कम, बिगड़ा ज्यादा।

प्रश्न 70: भविष्यवक्ताओं ने बीसवीं सदी के बारे में क्या चेतावनियाँ दी थीं?

उत्तर 70: भविष्यवक्ता और दूरदर्शी पहले से ही बीसवीं सदी की अवगति की संभावनाएँ बताते और चेतावनी देते रहे थे। ईसाई मान्यता का 'सेवेन टाइम्स', इस्लाम मान्यता की 'चौदहवीं सदी', और भविष्य पुराण की विनाश, विकृति जैसी बातें मिलकर यही दर्शाती थीं कि विभीषिकाओं की आशंका अपनी विकरालता दिखाती रही।

प्रश्न 71: कालचक्र का क्रम इक्कीसवीं सदी में क्या परिवर्तन लाएगा?

उत्तर 71: कालचक्र का क्रम ऐसा है कि वह नीचे से ऊपर की ओर चलकर गोलाई बनाता है। बीसवीं सदी की क्षतिपूर्ति इक्कीसवीं सदी में होगी। इसमें विकास उभरेगा और विनाश की खाई पटती जाएगी। इसीलिए "इक्कीसवीं सदी बनाम उज्ज्वल भविष्य" का उद्घोष उजली परिस्थितियों का परिचायक माना जा सकता है। अनेक दिव्यदर्शियों और वैज्ञानिकों ने इस तथ्य का समर्थन किया है।

प्रश्न 72: 'युग संधि' किसे कहते हैं और इसका महत्व क्या है?

उत्तर 72: रात्रि की विदाई और प्रभात के आगमन के मध्यांतर को 'संधि वेला' कहा जाता है, जिसे ऊषाकाल या ब्रह्म मुहूर्त भी कहते हैं। युग संधि की मान्यता है कि यह बीसवीं सदी के अंतिम बारह वर्षों (1989 से 2000 तक) में होनी है। इसका महत्व असाधारण है, क्योंकि धान्यों की मध्यवर्ती नोक ही उपजाऊ होती है और गाड़ी के दो पहियों को चलाने में मध्यवर्ती धुरी की प्रमुख भूमिका होती है।

प्रश्न 73: युग संधि के दिनों में किस प्रकार के लोग सक्रिय होंगे?

उत्तर 73: प्राणवान कर्मयोगी, उग्र सिद्धि के इन दिनों में अपने में नई उमंगें देखेंगे। वे संघर्ष और सृजन के दोनों कार्यों में हनुमान एवं अंगद जैसा पुरुषार्थ करेंगे। लंका दमन और रामराज्य के सृजन में खुद को खपाने वालों की तरह असंख्यों को देखा जा सकेगा। रीछ-वानर, गीध, गिलहरी, केवट, शबरी जैसे अल्पशक्ति वालों की भी भूमिका देखने योग्य होगी। प्रखर प्रतिभाएँ युग सृजेताओं जैसी ऐतिहासिक भूमिका निभाएँगी।

प्रश्न 74: नवयुग को 'समुद्र मंथन' जैसा क्यों कहा गया है?

उत्तर 74: नवयुग समुद्र मंथन जैसा होगा, जिसमें समय की आवश्यकता के अनुरूप चौदह रत्न निकलेंगे। विज्ञान का दैत्य और अध्यात्म का देव दोनों पक्ष मिलकर समुद्र मंथन की भूमिका संपन्न करेंगे। प्रकृति मंदर पर्वत जैसी मथनी का काम करेगी, मानवी उत्साह वासुकि सर्प जैसी भूमिका निभाएगा, और दिव्य प्रेरणा का अदृश्य सहयोग कूर्मावतार की तरह इन सब का भार अपनी पीठ पर धारण किए होगा।

प्रश्न 75: नवयुग में कौन सी चौथी शक्ति उभरेगी और उसका क्या प्रभाव होगा?

उत्तर 75: राजशक्ति, बुद्धिशक्ति और धनशक्ति के महत्व से सभी परिचित हैं, लेकिन नवयुग का अवतरण करने में चौथी शक्ति "प्रखर प्रतिभा" उभरेगी। इसे भाव संवेदनाओं से भरी पूरी आदर्शवादी उमंग भी कह सकते हैं। यह सभी सुसंस्कारी नर-नारियों को अनुप्राणित करेगी जो 'हम बदलेंगे, युग बदलेगा' का आदर्श प्रस्तुत कर रहे होंगे।

प्रश्न 76: नवयुग में मानव धर्म के रूप में किन मान्यताओं को सार्वभौम मान्यता मिलेगी?

उत्तर 76: नवयुग में मानव धर्म के रूप में समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी को सार्वभौम मान्यता मिलेगी। इसका तत्त्वदर्शन नवयुग का धर्मशास्त्र बनेगा और व्यवहार में उतरेगा। यह समाज में एक परिष्कृत वातावरण और अभिनव संरचना के लिए आधार बनेगा।

प्रश्न 77: विज्ञान का उपयोग और शहरीकरण का स्वरूप भविष्य में कैसे बदलेगा?

उत्तर 77: विज्ञान का उपयोग अब युद्ध साधनों की प्रतिस्पर्धा में न होगा। बड़े शहर और बड़े कारखाने अनुपयोगी सिद्ध हो रहे हैं। इनकी ओर से मुँह मोड़ते ही देहात कस्बों में बदलेंगे, कुटीर उद्योग पनपेंगे, और ग्राम्य विकास की नई लहर चलेगी। विज्ञान, पूँजी और कौशल के गाँवों पर केंद्रित होने से प्रदूषण, शहरी घिचपिच, अस्वस्थता और बेकारी जैसी समस्याओं का समाधान निकलेगा।

प्रश्न 78: इक्कीसवीं सदी की दो प्रमुख उपलब्धियाँ क्या होंगी?

उत्तर 78: समुद्री जल को पेय बनाना और सूर्य शक्ति को ऊर्जा के लिए प्रयुक्त करना, यह दो कार्य इक्कीसवीं सदी की प्रधान उपलब्धियाँ होंगी। इससे रेगिस्तान उपजाऊ भूमि में बदले जा सकेंगे।

प्रश्न 79: भविष्य में जनसंख्या वृद्धि और लिंग समानता पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

उत्तर 79: समझदारी बढ़ने के साथ जनसंख्या वृद्धि का अनौचित्य सबकी समझ में आ जाएगा और अमर्यादित प्रजनन समाप्त हो जाएगा। आधी जनसंख्या नारी के रूप में उपेक्षित है, लेकिन अगली शताब्दी में नर और नारी एक समान बनकर रहेंगे, जिससे जनशक्ति दोगुनी हो जाएगी।

प्रश्न 80: भविष्य में सामाजिक एकता और समता कैसे मजबूत होगी?

उत्तर 80: एकता और समता का औचित्य समझा और आग्रह किया जाएगा। संप्रदाय, क्षेत्र, भाषा, जाति आदि के नाम पर चल रही विषमता घटती और मिटती जाएगी। एक धर्म, एक जाति एवं एक भाषा जैसी मान्यताएँ दिन-दिन प्रबल होती जाएँगी।

प्रश्न 81: नवयुग में साहित्य, संगीत, कला और मानवीय चिंतन में क्या परिवर्तन आएंगे?

उत्तर 81: साहित्य, संगीत और कला के अधिष्ठाता भावना और विचारणा को परिष्कृत करने की योजनाएँ बनाएँगे और उन्हें पूरी करेंगे। सबसे बड़ी बात होगी कि मनुष्य का चिंतन, चरित्र और व्यवहार बदलेगा। उसमें मानवी गरिमा के प्रति आस्था का समावेश होगा, और मर्यादाओं का सभी ध्यान रखेंगे। व्यक्तिवादी संकीर्ण स्वार्थपरता के स्थान पर समाज निष्ठा एवं परमार्थ परायणता श्रेय प्राप्त करेंगी।

प्रश्न 82: नवयुग में सुधार और परिवर्तन की प्रक्रिया कैसी होगी?

उत्तर 82: सेवा और सृजन की उमंगें तूफानी गति से उभरेंगी। इसलिए सुधार और परिवर्तन के आयोजन

स्थानीय परिस्थितियों, आवश्यकताओं और साधनों के अनुरूप ही होंगे। ऐसे देवमानवों का बाहुल्य होगा जो एक जीवंत सृजन संस्था के रूप में सोचने और करने में कटिबद्ध होंगे। इस परिवर्तन का वास्तविक श्रेय अदृश्य वातावरण के नियंता को मिलेगा, पर हर क्षेत्र के मूर्धन्य और संस्था-संगठन भी यशस्वी बनेंगे।

प्रश्न 83: नवयुग की संभावनाओं के प्रति किन लोगों का क्या रवैया रहेगा और अंततः क्या होगा?

उत्तर 83: नवयुग की संभावनाओं को कपोल कल्पना समझने वाले, उपहास उड़ाने वाले, और निष्क्रिय रहने वाले बहुत थोड़े होंगे। अड़ंगे अटकाने और प्रतिगामिता बनाए रखने वाले दुराग्रहियों की भी कमी न रहेगी। पर अंततः **जीतेगा सृजन ही**। प्रकाश का ही अभिनंदन होगा और सतयुग की वापसी की सुखद संभावनाएँ अगले दिनों साकार होकर रहेंगी।